

(मित्रावरुणौ) या धारयते देवा: सुदूरा दक्षिणतरा । श्रुत्याप प्रमहसा 7, 66,
2. तद्धीना अवस्थ्यौ पुष्टामिर्दक्षिणपितरः । स्याम मरुतो वृथे 8, 52, 10.
स्वैर्दक्षिणपितरुं सीट् VS. 14, 3. ये देवा मनोजाता मनोयुजः सुदूरा दक्षिण-
तारः TS. 1, 2, 2, 1. दधक्षते दक्षिणम् श्रावयुनि CĀNKH. Ça. 8, 3, 4; wohl ir-
rige Lesart (vgl. AV. 7, 14, 4).

दक्षिणिता (दक्ष + विं) f. (mit Erg. von गाथा) *der durch Daksha
festgestellte Gesang, Bez. eines best. Gesanges* JĀGN. 3, 114.

दक्षवृद्ध् (दक्ष + वृध्) adj. der Tüchtigkeit u. s. w. sich erfreuend: दक्षीय
दक्षवृद्धे TS. 3, 5, 8, 1.

दक्षस् (von दक्ष) adj. = दक्षः श्रा वा भूषित्यतयो बन्म रोदस्योः प्रवाच्यं
वृषणा दक्षसे महे RV. 1, 131, 3. लभिता शतर्दिहमासि दक्षसे 2, 1, 11. पश्चा-
यज्ञा वा श्रुमये गिरा गिरा च दक्षसे (शंसिष्म) 6, 48, 1. वृथस्य दक्षसः (SV.
दक्षस्य) 8, 13, 1.

दक्षसाधन (दक्ष + सा०) adj. Tüchtigkeit zuwegebringend, muthma-
chend: पवस्व दक्षसाधने देवेभ्यः पीतये हरे RV. 9, 25, 1. 27, 2. 98, 8, 101,
15. 104, 3.

दक्षसाकर्षी (दक्ष + सा०) m. N. pr. des 9ten Manu VP. 268. BHĀG. P.
8, 13, 18.

दक्षसुत (दक्ष + सुत) 1) m. Daksha's Sohn (?): °प्रमात R. 5, 43, 14.
Anders der Comm.; s. R. GOOR. Uebers. IX, 346, N. 40. — 2) f. श्रा eine
Tochter Daksha's; pl. insbes. die Weiber des Mondes RAGH. 3, 33.

दक्षाय्य (von दक्ष) UNĀDIS. 3, 96. 1) adj. einer dem man es recht oder
geschickt machen muss, dem man sich gefällig erweisen muss: श्रुचिष्ठ-
मैसि प्रियो न मित्रा दक्षाय्यो श्र्वमेवासि सोम RV. 1, 91, 3. (अग्निः) दक्षाय्यो
यो दास्त्वते दम श्रा 2, 4, 3. दक्षाय्यो यो दम श्रास नित्यः 7, 1, 2. दक्षाय्योप द-
तता साखायः 97, 8. — 2) m. a) Geier (vgl. दक्षाय्य). — b) Bein. Garu-
da's UÉGVAL.

दक्षि oder दक्षिन् (von दक्षु, Padap.: धक्षि; vgl. RV. Pañt. 4, 41) adj. (nur
voc. दक्षि) brennend, flammend: श्राद्धस्य ते कृज्ञासौ दक्षि (Sū. := दक्षिः)
सूर्यः: dann sind deine Bewohner schwarz, o Flammender RV. 1, 141, 8.
बैं वि भ्रास्यनु दक्षि (Sū. := दक्षिः) दृवने 2, 1, 10. — Vgl. दक्षु.

दक्षिणा (von दक्ष) UNĀDIS. 2, 50. Im Veda nur proparox., im ÇAT. BR.
ofters oxyt.; vgl. Ind. St. 4, 160. fgg. ÇĀNT. 1, 9 — 11. Pronominale Declina-
tion erst in den Sūtra (z. B. KĀT. Ça. 2, 7, 22. ĀÇV. GRH. 1, 13). Nach
P. 4, 1, 34. 7, 1, 16. VOP. 3, 12, 37 wird das Wort bloss in der localen Bed.
recht und südlich wie ein Pronomen declinirt; im abl. und loc. sg. (द-
क्षिणे) KĀT. Ça. 7, 3, 31. M. 2, 63) m. und neutr. so wie im nom. pl. m.
kann aber auch in dieser Bed. die Nominal-Declination eintreten. Hier-
nach wäre दक्षिणायां (vgl. auch P. 7, 1, 39, VĀRT. 1, Sch.) दिशि HARIV.
12390 als archäistische Form anzusehen. 1) adj. f. श्रा a) tüchtig, ge-
schickt (vgl. दक्ष) H. a.n. 3, 206. दक्षिणा (nicht दक्षिणे) गाथकाः P. 4, 1, 34.
विपद्धतयः ÇĀTR. 14, 56. Vgl. अदक्षिणा unersfahren, einfältig. — b) recht,
auf der rechten Seite befindlich; im Gegens. zu सव्य, वाम AK. 3, 2, 34.
H. 1466. H. a.n. MED. p. 51 (wohl अवाम st. श्राम zu lesen). Ursprüng-
lich wohl nur von der Hand, weil die rechte Hand die geschickte ist.
कृस्त, कर्, पाणि RV. 3, 39, 6. 6, 22, 9. 54, 10 u. s. w. M. 2, 63. 72. SUND.
4, 12. R. 5, 20, 15. बाङ्ग VS. 1, 24. VID. 262. पदा दक्षिणा RV. 10, 61, 8.
अरु VS. 4, 27. पार्श्व AV. 12, 1, 34. पूर्वा दक्षिणासव्याध्याम् 28. ÇAT. BR. 4,

3, 4, 13 u. s. w. तीर् R. 2, 52, 86. रोधम् MĀLAV. 71, 2 (lies: दक्षिणे). पार
RIGA-TAR. 3, 353. दक्षिणं परी (३ mit परि) Jmd so umwandeln, dass man
ihn zur Rechten hat: तच्चन्नदिवाकरदयो यद्यन्ताराः परिपति दक्षिण-
म् BHĀG. P. 4, 12, 25. दक्षिणं करु Jmd zu seiner Rechten nehmen, seine
rechte Seite zukehren, seine Hochachtung bezeugen: शस्त्राः कुर्वति मां
सव्यं दक्षिणं पश्यो इपे 1, 14, 13. सर्वे नदन्तराण्यशकुस्तज्जन्म दक्षिण-
म् ४, 18, 5. — c) südlich, im Süden befindlich, nach Süden gerichtet; f.
(mit Ergänzung von दिश्) Süden (Süden liegt dem nach der aufgehenden
Sonne gerichteten Gesicht zur Rechten) AK. 4, 1, 2, 3. H. a.n. MED.
दक्षिणा दिक् AV. 3, 27, 2. 4, 14, 7. VS. 14, 13. ÇAT. BR. 2, 6, 1, 9. M. 3, 258.
MBH. 4, 167. 13, 4661. DRAUP. 3, 7. दिशः: — दक्षिणास्याः RAGH. 6, 63. द-
क्षिणास्याः दिशि ARG. 4, 14. HARIV. 8930. 12398. R. 4, 41, 17. BHĀG. P. 5,
17, 9. अश्यगारे प्रपञ्चे पूर्वया द्वारा यजमानो दक्षिणाया पल्यः ÇAT. BR. 43,
4, 1, 8. सूर्यस्य दक्षिणामन्वावृतम् AV. 10, 3, 37. भाग die südliche Hemis-
phäre R. 1, 60, 20. दक्षिणेण पूर्वरैणा M. 5, 92. मार्ग R. 2, 92, 13. दक्षिणं नि-
स्तं मुखम् (महूदिवस्य) SUND. 3, 25. अग्निः (vgl. दक्षिणाग्निः) M. 2, 234. H.
826. चन्द्रादित्योपर्यने देव भवते दक्षिणमुत्तरं च (vgl. दक्षिणायन) SUÇR. 1,
19, 11. VARĀH. BHĀG. S. 3, 1. BHĀG. P. 3, 11, 11. दक्षिणे चैव भास्करे so v. a.
दक्षिणायने MBH. 6, 5668. मारुतं von Süden kommender Wind, Südwind
SUÇR. 1, 76, 12. 22, 11. RAGH. 4, 8. — d) gerade, rechtschaffen; liebens-
würdig, gefällig, zuvorkommend; = सरल AK. 3, 1, 8. TRIK. 3, 3, 131.
H. 376. H. a.n. MED. = परकृद्वानुवर्तिन्, कृद्वर्तिन् (daher dependent,
subject bei WILS.). H. a.n. MED. दाक्षिणाचार MBH. 4, 167. दक्षिण im Ge-
gens. zu वामाधिन् R. 3, 23, 17. सीता प्रकृतिदक्षिणा 2, 96, 7. 3, 24, 13.
5, 20, 15. BRAHMA-P. 56, 13. एषु वत्नेकमहिलासु समरागो दक्षिणः (impart-
ial BALL.) SĀB. D. 71. 70. भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिज्ञाने ÇAK. 93. या गौरवं
भयं प्रेम सद्वावं पूर्वनायके। न मुच्यत्यन्यसक्तापि सा (नायिका) ज्ञेया दक्षिणा
बृहैः || SVĀMIN zu VP. ÇKDRA. Als Beiw. von Çiva Çiv. — e) दक्षिणा
श्रास्याः: der südliche heilige Text, neben पूर्व, पश्चिम, उत्तर und उर्ध्वा-
माय, Bezeichnung eines der heiligen Texte der Tāntrika Verz. d. Oxf.
H. 91, a, N. 3. दक्षिण n. bezeichnet ebend. 91, a, 17. 18 die Lehre oder das
Ritual der Çākta von der rechten Hand: सर्वेभ्यशोत्तमा वेदा वेदेभ्यो वै-
ज्ञवं परम्। वैज्ञवाडुत्तमं शैवं शैवाद्वक्षिणामुत्तमम्॥ दक्षिणाडुत्तमं वामं वा-
मातिसद्वात्मुत्तमम्। सिद्धात्माडुत्तमं कौलं कौलात्परतरं न हि। — 2) m.
die Rechte (der rechte Arm, die rechte Hand): कृतो वृत्रे दक्षिणेन्द्रः RV.
8, 23, 3. 70, 1. 6. 10, 180, 1. स सव्येन यमति व्रायतश्चित्स दक्षिणे संग्रामा
कृतानि 1, 100, 9. — 3) m. das Ross rechts von der Deichsel: युक्तात्मे श्र-
स्तु दक्षिण उत्त सव्यः शतक्रतो RV. 1, 82, 5. भूमे युज्ज्ञाति दक्षिणम् 10, 164,
2. इन्द्रस्येव दक्षिणाः अप्येति VS. 9, 8. — 4) m. oder n. die rechte Seite:
दक्षिणे H. 1295. सव्यं दक्षिणमेव च वाल्यस्व nach links und nach rechts
R. 2, 92, 13. Süden: श्रतः परं च देशो इवं दक्षिणे दक्षिणायाः N. 9, 23. श्रवं
देशो दक्षिणासंश्रितः R. 4, 52, 4. das Südland, der Dekhan (?): दक्षिणास्यो-
त्तरो गिरिः R. 4, 63, 22. 27. GOBAR.: il monte situato a borea del (mar)
meridionale; aber उत्तरगिरि ist wohl N. pr. und die Ergänzung von
Meer ist wohl gewagter als die von Land. दक्षिणाधिपति VET. 35, 9, 10.
Vgl. दक्षिणात्म्, दक्षिणात्रा, दक्षिणा, दक्षिणात्, दक्षिणाहि, दक्षिणेन. — 5)
f. श्रा a) (nämlich गो) die fruchtbare (eig. tüchtige) Milchkuh, syn. mit
घेनु. इन्द्रो भग्नो वाज्ञा श्रस्त्य गावः प्र ज्ञापते दक्षिणा श्रस्य पूर्वीः भेषु-